ISSN : 2583-2948

साजिश में कवि

डॉ राजेश श्रीवास्तव
निदेशक रामायण केन्द्र भोपाल
मो॰ – 7974004023

बुरा वक्त है यह

सचमुच बहुत बुरा

कि संदेह में बार बार अपनी ही सूरत को निहारता

निहारता अपने ही अक्स को

कि परछाइयों से सवालजुदा

अपनी ही आहट पर चौंक चौंक पड़ता

अपने ही आप से साजिश में मगशूल कवि

सचमुच बहुत बुरा वक्त है यह जब

अपनी पहचान को कोसता है वह

रोता जा रहा है ज़ार ज़ार

कवि हो रहा है शर्मिंदा

अपने हिन्दू होने पर

जातियों की तरफदारी में बँट गया है उसका ईमान

कि कवि अब जाति की पहचान बन गया है।

साजिशों में उलझी दुनिया

अब घेर चुकी है कवि को

कवि अब कविता नहीं साजिश लिखता है

ISSN : 2583-2948

दुनिया के सारे लोग गए हैं अपने काम पर

पर कवि बैठा है अपनी काली कलम थामे

पता नहीं कविता में साजिश है या

साजिश में शुमार है एक शातिर कवि।